अपने स्कूल को एक उपहार (उपवाचक)

- ऋतु भूषण

प्र.1. राजु को उसका पुराना स्कूल कैसा लगता था?

उ. राजु को उसका पुराना स्कूल बहुत अच्छा लगता था। राजु की टांगे बहुत पलती और दुबल थी। अतः वह ज्यादा देर तक खडा नहीं रह पाता था पर उसके पुराने स्कूल में कभी किसीने उसकी कमजोरी की ओर ध्यान नहीं दिया। वह एक मेधावी छात्र था। वह हमेशा कक्षा में प्रथम आता था। हर विषय में सबसे आगे रहता था।

पुराने स्कूल में उसके बहुत सारे मित्र थे और सभी अध्यापक उसे बहुत पसंद करते थे।

अपने पुराने स्कूल के प्रति राजु का विचार था कि यदि स्वर्ग में भी स्कूल हो तो,वे भी उसके पुराने स्कूल से ज्यादा अच्छे तो नहीं हो सकते।

प्र.2. राजु के प्रति नये स्कूल के साथियों का व्यवहार कैसा था?

उ. राजु के प्रति नये स्कूल के साथियों का व्यवहार ठीक नहीं था। वह नए स्कूल में प्रवेश करने लगा तो सभी लोग ने उसकी टांगों की ओर संकेत करके हँसते हुए उसका मज़ाक भी उडाया। जब पहला पीरियड शुरू हुआ तो अध्यापक ने उसे कक्षा में सब से पीछे बिठा दिया। जब राजु से उसका परिचय पूछा गया तो उसने बताया कि वह एक गाँव के स्कूल से आया है। इस पर छात्रों को हँसी आयी। हर दिन उसके लिए ऐसा ही रहा। उसका कोई मित्र भी नहीं बन पाया था। वह खेलने भी नहीं जाता था। नए स्कूल के साथी जान गए थे कि राजु एक गवार लड़का है और उसे अपने गाँव के स्कूल का बडा 'घमंड' है।

प्र.3. राजु ने अपने स्कूल को किस तरह उपहार समर्पित किया?

उ. राजु ने अपनी स्थिति से निबटने के लिए बड़ी चतुराई से एक योजना बनाई।

कक्षा में अध्यापक कोई प्रश्न पूछे तो अपना हाथ उठाना बंद कर दिया। वार्षिक परीक्षामें अच्छे अंक पाने के लिए अधिक परिश्रम करने का निश्चय किया। वह साबित करना चाहता था कि गाँव का स्कूल कोई मूर्खों का स्वर्ग नहीं था। सब लड़कोने सोचा कि राजु फेल होगा। राजु ने घर में खूब पढ़ाई की ओर वार्षिक परीक्षाओं में बहुत अच्छा लिखा। जब परीक्षा फल आया तब वह कक्षा में प्रथम आया था। प्रथम आने पर राजु बहुत खुश हुआ। अब उसे लगा कि उसने अपने पुराने स्कूल को सुंदर और समुचित उपहार समर्पित किया।

sakshieducation.com